International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 28-12-2025; Accepted: 27-01-2026; Published: 11-02-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 106-108

हिंदी सिनेमा में राम–चरित्र: ऐतिहासिक और समकालीन परिप्रेक्ष्य

विष्णुप्रिया भुक्ता[1], डॉ स्नेहलता दास[2]
[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग, रमादेवी महिला विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, ओड़िशा, भारत
[2] सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, रमादेवी महिला विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, ओड़िशा, भारत

सारांश
यह शोधपत्र विभिन्न दशकों में हिंदी सिनेमा में श्रीराम के सिनेमाई रूपांकन का विश्लेषण करता है। अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि राम के स्वरूप और उनके आदर्शों को समय के साथ बदलते सांस्कृतिक, राजनीतिक और नैतिक परिवेश के अनुरूप फिल्मों में किस प्रकार प्रस्तुत किया गया। भारतीय जन चेतना में श्रीराम धर्म, न्याय और आदर्श के प्रतीक माने जाते हैं। मूक सिनेमा काल से ही उन्हें आदर्श पुरुष के रूप में पर्दे पर दिखाया जाता रहा है। 1917 की 'लंका दहन' और 1943 की श्राम राज्य' जैसी आरंभिक भक्तिपरक फिल्मों से लेकर आधुनिक एनिमेटेड संस्करणों तक, फिल्मकारों ने धार्मिक आस्था और कलात्मक स्वतंत्रता के बीच संतुलन साधने का प्रयास किया है। यह शोध चयनित फिल्मों की कथा संरचना, सौंदर्यबोध, दर्शक–धारणा और विचारधारात्मक परिवर्तनों का अध्ययन करता है। साथ ही यह लेख हिंदी सिनेमा में राम–चरित्र के विकास को दशकों के तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास करता है, विशेषतः 21वीं सदी में हुए उसके पुनर्पाठ को केंद्र में रखते हुए। अंततः शोधपत्र यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि हिंदी सिनेमा में श्रीराम का चित्रण एक बहुस्तरीय और परिवर्तनशील प्रक्रिया है, जो भारतीय समाज की विविध धाराओं को प्रतिबिंबित करती है।

मूल शब्दः भारतीय सिनेमा, मूक फ़िल्में, सवाक् सिनेमा, पौराणिक फ़िल्में, सांस्कृतिक चेतना, राम का चरित्र, रामकथा, सांस्कृतिक प्रतीक, मर्यादा–पुरुषोत्तम, राष्ट्रीय नायक, तकनीकी प्रस्तुति, CGI और VFX

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में राम केवल एक पौराणिक चरित्र नहीं, बल्कि नैतिक आदर्श, सामाजिक मर्यादा और सांस्कृतिक चेतना के केंद्रीय प्रतीक रहे हैं। हिंदी सिनेमा ने रामकथा और राम–चरित्र को दृश्य–श्रव्य माध्यम के द्वारा जनमानस तक पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मूक फ़िल्मों के भक्तिपरक और ग्रंथानुगामी चित्रण से लेकर आधुनिक डिजिटल युग के प्रयोगधर्मी प्रस्तुतिकरण तक, राम का सिनेमाई स्वरूप निरंतर बदलते सामाजिक, सांस्कृतिक और दर्शकीय दृष्टिकोणों के अनुरूप विकसित होता रहा है।

भारत में मूक फ़िल्मों के दौर से ही रामकथा को पर्दे पर दिखाने का सिलसिला शुरू हो गया था। राम जन्म, राम का वनवास, राम–रावण युद्ध जैसे विषयों पर कई फ़िल्में उस मूक सिनेमा के ज़माने में बनाई गईं। जब 1931 में भारत में सवाक् फ़िल्मों का दौर आरंभ हुआ, तब 1933 में कलकत्ते के मदन थियेटर्स ने 'रामायण' पर पहली सवाक् फ़िल्म बनाकर इसकी शुरुआत की। इसके बाद रामायण पर हिंदी सिनेमा बनाने का सिलसिला लगातार चलता आ रहा है और अब तक लगभग 200 के आस–पास सिनेमा रामायण और उसके विभिन्न प्रसंगों पर बन चुकी हैं। इनमें 'रामलीला', 'राम विवाह', 'सीता स्वयंवर', 'हनुमान विजय' जैसे फ़िल्में शामिल हैं।

1917 में प्रस्तुत हुई 'लंका दहन' राम और उनकी कथा पर बनी पहली सिनेमा थी जिसे बड़े पर्दे पर उतारा गया। यह फिल्म भारत में पारंपरिक और पौराणिक सिनेमा की मज़बूत नींव रखने वाली पहली कोशिश थी। दिलचस्प बात यह है कि उस दौर में महिलाएँ फिल्मों में काम करने से कतराती थीं, इसलिए सीता और राम दोनों के किरदार पुरुष अभिनेताओं ने निभाए। 'लंका दहन' धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक विमर्श को हिंदी सिनेमा जगत में लाने का पहला प्रयास था। रामकथा पर आधारित फिल्मों की श्रृंखला में दादासाहेब फाल्के और जी. वी. साने का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। तीन वर्ष बाद फाल्के ने 1920 में 'सीता स्वयंवर 'प्रस्तुत की। इसके तुरंत बाद 1921 में जी. वी. साने की रामकथा पर आधारित तीन फिल्में 'राम जन्म', 'सती सुलोचना' और 'वाल्मीकि' प्रदर्शित हुईं और तीनों ने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। 1923 में फाल्के ने 'राम मारुति युद्ध' बनाई तथा 1924 में उनकी 'सीता शुद्धि' रिलीज हुई। 1926 में उन्होंने एक साथ तीन फिल्मों राम 'राज्य विजय', 'धनुर्भंग' और 'जानकी स्वयंवर' का निर्माण किया। इसके पश्चात 1927 में 'हनुमान जन्म' और 1928 में 'परशुराम प्रदर्शित' हुईं। उल्लेखनीय है कि रामकथा पर केंद्रित ये सभी फिल्में दर्शकों द्वारा सराही गईं और सफल रहीं। राम और राम कथा से जुड़े विविध पात्रों और घटनाओं का विविध चित्रण किया गया है।

1931 में सवाक फिल्मों की शुरुआत के साथ कांजीभाई राठौर की 'हरिश्चंद्र' और जे. जे. मदान की 'सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र' सफल रहीं। 1932 में प्रभात फिल्म्स की पहली और भारत की पहली दो भाषाओं में एक साथ प्रदर्शित फिल्म 'अयोध्या का राजा' प्रस्तुत हुई, जिसे वी शांताराम ने निर्देशित किया। इसके बाद 1933 में देवकी बोस की 'रामायण' और 1934 में उनकी फिल्म 'सीता' प्रदर्शित हुई, जिसमें पृथ्वीराज कपूर ने राम का अभिनय किया। 'सीता' भारत की पहली फिल्म थी जिसे द्वितीय वेनिस फिल्म समारोह में प्रदर्शित करने के लिए चुना गया। रामकथा पर आधारित फिल्मों की यात्रा में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ 1942 में तब आया, जब निर्देशक विजय भट्ट ने 'भरत मिलाप' प्रस्तुत की, जिसमें प्रेम अदीब राम बने और शोभना समर्थ ने सीता की भूमिका निभाई। इस सफल जोड़ी को आगे बढ़ाते हुए विजय भट्ट ने 1943 में 'राम राज्य' और 1948 में 'रामबाण' का निर्माण किया।

1943 में रिलीज़ हुई फिल्म श्राम राज्यश ने श्री राम की कथा के माध्यम से आदर्श शासन की अवधारणा प्रस्तुत की। विजय भट्ट द्वारा निर्देशित यह फिल्म आध्यात्मिक और ऐतिहासिक रूप से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि यह वही एकमात्र फिल्म थी जिसे महात्मा गांधी ने देखा था। इस फिल्म का संदेश गांधी जी के 'राम राज्य' के विचारों को प्रतिध्वनित करता है, जो एक ऐसे समाज की कल्पना है जो न्याय, धर्म, शांति और सौहार्द

पर आधारित हो, और जिसे आदर्श शासन की अवधारणा के रूप में रामायण की कथा के जरिए पेश किया गया है। फिल्म में राम जन्म, राम वनवास और राम–रावण युद्ध जैसे प्रसंगों का समावेश नहीं है। इसका कथानक मुख्यतः देवी सीता के वाल्मीकि आश्रम प्रवास, लव–कुश के जन्म, अश्वमेध यज्ञ तथा राम और लव–कुश के पुनर्मिलन के बाद सीता के धरती में लीन होने तक सीमित है। समग्र रूप से देखा जाए तो यह फिल्म राजा राम के शासनकाल से जुड़े घटनाक्रमों को रूपायित करती है। अब तक बनी फ़िल्में भले ही तकनीकी रूप से अधिक विकसित नहीं थी अपितु भक्ति और सांस्कृतिक चेतना का अद्भुत समाहार थी।

बाबूभाई मिस्त्री जैसे निर्देशकों ने 1950–60 के दशक में धार्मिक–पौराणिक सिनेमा को विशेष दिशा दी। संपूर्ण रामायण (1961) और लव–कुश (1967) जैसी फ़िल्मों ने उत्तरकांड को आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया, जिनमें भारतीय पारिवारिक मूल्य, नारी–गरिमा जैसे तत्व भव्य सेटों और संगीत के माध्यम से उभरकर आए। उस दौर के अभिनेताओं, विशेषकर अरुण गोविल ने राम की छवि को इतना जीवंत और श्रद्धेय बना दिया कि वे जनमानस में वास्तविक आध्यात्मिक स्वरूप के रूप में पूजे जाने लगे।

'सम्पूर्ण रामायण' का निर्माण बसंत पिक्चर्स के बैनर तले होमी वाडिया द्वारा किया गया था। 1961 में प्रदर्शित इस फिल्म के निर्देशक तकनीक के जादूगर कहे जाने वाले बाबूभाई मिस्त्री थे। यद्यपि इसका शीर्षक 'सम्पूर्ण रामायण' रखा गया है, फिल्म की कथा सीता–स्वयंवर से आरंभ होकर क्रमशः राम–वनवास, सीता–हरण, रामदूरावण युद्ध और राम के राज्याभिषेक से गुजरते हुए सीता–वनवास, लव–कुश जन्म तथा अंत में सीता के धरती में विलीन होने तक पहुँचती है। रंगीन युग के प्रारंभिक दौर में इसे गेवा–कलर में फिल्माया गया था। फिल्म 'लव–कुश' का कथानक भगवान राम के पुत्रों, लव और कुश, तथा माता सीता के जीवन पर केंद्रित है। सीता के वनवास के दौरान महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में जन्मे इन दोनों पुत्रों ने वहीं रामायण का अध्ययन किया और शत्रुओं का साहसपूर्वक सामना करने हेतु युद्धकला में प्रवीणता प्राप्त की। यह सिनेमा न केवल पारिवारिक संबंधों को रेखांकित करती है, बल्कि न्याय, त्याग और धर्म जैसे गहरे विषयों को भी स्पर्श करती है। साथ ही, यह बाल–मन, मातृत्व, तथा सामाजिक और आत्म–उत्तरदायित्व की अवधारणाओं को अत्यंत प्रभावी ढंग से रूपायित करने में सफल रही है

1987–88 में दूरदर्शन पर प्रसारित रामानंद सागर की रामायण, भले ही एक हिंदी सिनेमा नहीं थी किंतु रामकथा को घर–घर पहुँचा दिया। इसकी सांस्कृतिक पहुँच, दर्शक–प्रभाव और सामाजिक चेतना में योगदान अतुलनीय रहा तथा इसने देश में पौराणिक कथाओं के पुनरुत्थान को नई दिशा दी। कोविद–19 के समय भी इसे दूरदर्शन पर पुनः प्रसारित किया गया था। 1990 के दशक और शुरुआती 2000 के वर्षों में आध्यात्मिक और पौराणिक फिल्मों का पुनरागमन तो हुआ, लेकिन इस बार उन्हें नए दर्शक वर्ग और तकनीकी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। वर्ष 1992 में प्रदर्शित 'Ramayana: The Legend of Prince Rama' अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक ऐसी ऐनिमेटेड फिल्म मानी गई, जिसे भारत और जापान के सहयोग से बनाया गया था। रामायण की कथा को एनीमेशन की तकनीक के ज़रिए पेश करना उस समय एक नया और रचनात्मक नवाचार था। निर्देशक राम मोहन, कोइची सासाकी और यूगो साको ने मिलकर इस फिल्म को बनाया, और यह फिल्म न सिर्फ भारतीय दर्शकों बल्कि वैश्विक दर्शकों के बीच भी काफी सराही गई। यह फिल्म भक्ति की पवित्र भावना को आधुनिक तकनीकी प्रस्तुति के साथ जोड़ने का एक सफल और प्रभावशाली प्रयास थी।

अभी हाल ही में, साल 2023 की हिंदी सिनेमा 'आदिपुरुष' राम के चरित्र को आधुनिक दृश्य–तकनीकों और एक नई कहानी बयानी शैली के ज़रिए फिर से सोचने का प्रयास किया। एक उच्च–निर्माण–लागत वाली फिल्म थी, जिसमें आधुनिक डिजिटल तकनीक, वी एफ एक्स (VFX) और सी जी आई (CGI) का उपयोग करके पौराणिक कथा को नए रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया। एक ओर यह फिल्म आधुनिक सिनेमा की तकनीकी संभावनाओं को दर्शाती है, वहीं दूसरी ओर इसके संवाद, वेशभूषा और संपूर्ण प्रस्तुति को लेकर तीव्र आलोचनाएँ भी हुईं। ऐसे फिल्मी प्रयास अकसर युवा और वैश्विक दर्शकों को ध्यान में रखते हैं, और नवीनता तथा सांस्कृतिक मर्यादा के बीच संतुलन बनाना उनके लिए चुनौतीपूर्ण होता है। 'आदिपुरुष' को कुछ संवादों को लेकर काफी आलोचना झेलनी पड़ी है, क्योंकि भारतीय मनीषा में राम सिर्फ एक पौराणिक चरित्र नहीं, बल्कि आदर्श और मानवता के प्रतीक हैं। इसी भावनात्मक और आध्यात्मिक लगाव के कारण लोग पर्दे पर राम के चित्रण को लेकर संवेदनशील रहते हैं। आमतौर पर जो फिल्में पारंपरिक मूल्यों के प्रति ईमानदार रहती हैं, उन्हें सराहा जाता है, और जो ज़्यादा व्यावसायिक या गलत ढंग से बनाई गई लगती हैं, उन्हें आलोचना का सामना करना पड़ता है।

हिंदी सिनेमा में राम के चरित्र का विकास: दशकों के तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में 21वीं सदी का पुनर्पाठ

हिंदी सिनेमा में राम का चरित्र केवल धार्मिक भावनाओं का प्रतीक नहीं रहा, बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को अभिव्यक्त करने वाला एक महत्वपूर्ण माध्यम भी रहा है। प्रारम्भ से ही राम भारतीय समाज के लिए मर्यादा, धर्म, न्याय और आदर्श पुरुषत्व का प्रतीक रहे हैं और इसी कारण उनकी छवि फिल्मों में लगातार पुनर्निर्मित होती रही है। आरंभिक दशकों में सिनेमा का मुख्य उद्देश्य धर्मिक कथाओं के दृश्य–रूपांतर के माध्यम से दर्शकों में भक्ति–भाव उत्पन्न करना था। इसलिए राम का चरित्र एक अलौकिक, तेजोमय और पूर्ण आदर्शों से युक्त देवपुरुष के रूप में प्रस्तुत किया जाता था। 1950 से 1980 के काल में फिल्मों का सौंदर्यशास्त्र—उनकी वेशभूषा, संवाद, कैमरा–भाषा और संगीतकृसब कुछ भक्तिपरक दृष्टिकोण को पुष्ट करता था। राम एक ऐसे चरित्र के रूप में प्रस्तुत किया गया था जिनमें किसी भी मनोवैज्ञानिक जटिलता को स्थान नहीं दिया जाता था। वे निर्विवाद आदर्श थे, जिनका उद्देश्य दर्शकों को भक्ति और नैतिकता की ओर प्रेरित करना था।

1980 के बाद रामानंद सागर के 'रामायण' ने आम दर्शक के मानस में राम की एक स्थिर छवि स्थापित कर दी, जिसे राष्ट्रीय नैतिकता और सांस्कृतिक गौरव से जोड़ा गया। 1980 से 2000 के कालखंड में राम का सिनेमाई चरित्र कम दिखाई दिया, परंतु फिल्मों के नायकों में राम–आदर्श की छवि अधिक स्पष्ट होने लगीकृन्यायप्रिय, नारी–सम्मान के संरक्षक, संयमी, सत्यवादी और समाज–हितैषी। इस काल में राम एक धार्मिक प्रतीक से बढ़कर 'राष्ट्रीय नायक' रूप में स्थापित होते हैं, एक ऐसा चरित्र जो आदर्श शासन, नैतिक शक्ति और लोकमंगल का प्रतिनिधि है। 1920–30 के दशक में मौन चलचित्रों से लेकर रामानंद सागर के दूरदर्शन–धारावाहिक (1987) तक, राम का चित्रण मूलतः भक्तिपरक, आस्थाश्रित और ग्रंथोंनुकूल दिखाई देता है। दर्शक राम को एक आदर्श, एक आराध्य और एक नैतिक अनुकरणीय के रूप में देखते रहे।

21वीं सदी में प्रवेश करते ही हिंदी सिनेमा का सामाजिक–सांस्कृतिक परिदृश्य तेजी से बदला। दर्शक अब केवल किसी अलौकिक या चमत्कारिक देवता की छवि नहीं चाहते थे; वे चरित्रों में मनोवैज्ञानिक जटिलता, सामाजिक यथार्थ और मानवीय संघर्ष की उपस्थिति को अधिक महत्व देने लगे। इसी कारण राम का चरित्र

भी एक गहन पुनर्पाठ की प्रक्रिया से गुजरता है। 2000 के बाद निर्मित फिल्मों में राम की छवि आदर्श पुरुष से विकसित होकर एक अधिक मानवीय, करुणामय और भावनात्मक रूप में सामने आती है। 'बजरंगी भाईजान' जैसे उदाहरणों में नायक प्रत्यक्ष रूप से राम नहीं है, लेकिन चरित्र पूरी तरह राम–आदर्श की आधुनिक अभिव्यक्ति बन जाता है। बालक की रक्षा, करुणा, सत्य, नारी के प्रति सम्मान और सीमाओं को पार करके न्याय स्थापित करने की भावना चरित्र को राम आदर्श के निकट ले जाता है। यह राम का नया 'लोक–राम' स्वरूप है, जो मानवीय धरातल पर खड़ा है और आदर्शों को सामाजिक वास्तविकताओं के भीतर जीता है।

21वीं सदी की दूसरी दशक में कई बॉलीवुड फिल्मों में सीधे–सीधे भगवान राम के चरित्र को न दिखाकर, उनके मूल्यों और नैतिकता को परोक्ष रूप से प्रस्तुत करने की कोशिश की गई। इन फिल्मों ने भगवान राम से जुड़े आदर्शों और नैतिक मूल्यों को कहानी और चरित्रों के माध्यम से उभारने का प्रयास किया, ताकि दर्शक उन गुणों को महसूस कर सकें जो राम के आदर्शों से प्रेरित हैं। 'बजरंगी भाईजान', 'आरआरआर' और 'सिंघम रिटर्न्स' जैसी कुछ फिल्मों ने रामायण में व्यक्त आदर्शों को काल्पनिक कथाक्रमों और घटनाओं के माध्यम से उभारने की कोशिश की है। इन फिल्मों में रामायण के नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को आधुनिक और कल्पनिक कहानियों के ज़रिए दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। राम का प्रस्तुतीकरण अक्सर पूरी कथा के पुनरावर्तन के रूप में नहीं होता, बल्कि राम एक प्रतीक, एक नैतिक बिंदु या एक सांस्कृतिक स्मृति की तरह प्रयुक्त होते हैं। उदाहरण के लिए, अनेक फ़िल्में (जैसे स्वदेश, रावण, पीके, तनु वेड्स मनु रिटर्न्स में संवाद–संदर्भ) राम और रामायण को आधुनिक नैतिक दुविधाओं को समझाने के लिए एक रूपक के रूप में प्रयुक्त करती हैं। यह बदलाव यह दर्शाता है कि समकालीन दर्शक 'राम' को कथा–नायक की तरह नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक मानक की तरह ग्रहण करते हैं।

सौंदर्य और तकनीक की दृष्टि से भी 21वीं सदी में राम का प्रस्तुतीकरण बदल गया। 'आदिपुरुष' में CGI के आधार पर पौराणिक आख्यान को नए रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया, जो दर्शकों की अपेक्षाओं और सांस्कृतिक संवेदनाओं के बीच संघर्ष को सामने लाता है। इस से स्पष्ट होता है कि आधुनिक दर्शक तकनीकी आधुनिकता तो चाहते हैं, परंतु पौराणिक छवियों के साथ गहरे सांस्कृतिक और भावनात्मक संबंध के कारण वे पारंपरिक प्रतीकों से अत्यधिक विचलन स्वीकार नहीं करते।

जब हम विभिन्न दशकों की तुलना करते हैं, तो स्पष्ट दिखाई देता है कि राम–चरित्र का विकास भारतीय समाज की बदलती मानसिकता का दर्पण है। प्रारंभिक काल में वे पूर्ण आदर्श थे; 1980 के बाद वे राष्ट्रीय–सांस्कृतिक नेतृत्व के प्रतीक बने; और 21वीं सदी में वे एक बहुआयामी मानवीय चरित्र के रूप में उभरते हैं। इस परिवर्तन के केंद्र में दर्शक–संवेदना, सामाजिक यथार्थ, राजनीतिक विमर्श और फिल्म–दृष्टिकोण की बदलती प्रवृत्तियाँ हैं। आज का दर्शक आदर्शवाद की बजाय प्रामाणिकता और मनोवैज्ञानिक गहराई चाहता है। राम अब केवल 'मर्यादा–पुरुषोत्तम' नहीं, बल्कि एक 'नैतिक निर्णयों से जूझता हुआ मानव' भी हैं।

इस काल में राम सामाजिक न्याय, करुणा, मानवीय सम्बन्धों और नैतिक संघर्षों के माध्यम से पुनर्परिभाषित होते हैं । इक्कीसवीं सदी के सिनेमाई परिदृश्य में राम को "सांस्कृतिक नायक" के रूप में ऐसे प्रस्तुत किया जाता है कि आधुनिक दर्शक उनसे आत्मीयता स्थापित कर सके। उनके आदर्शों को सार्वभौमिक नैतिकता से जोड़ा जाता है, उनके संघर्षों को आधुनिक जीवन–कथाओं से समानांतर किया जाता है, उनके निर्णयों का मनोवैज्ञानिक पक्ष उभारा जाता है, और साथ ही, उनका दैवीय पक्ष भी सीमित लेकिन प्रभावी रूप में प्रस्तुत रहता है। इसलिए आज का राम–चरित्र बहुआयामी, मानवीय और पुनर्व्याख्यायित स्वरूप में दिखाई देता है। उनका एक ऐसा स्वरूप सामने आता है जो भारतीय संस्कृति की निरंतरता और आधुनिकता, दोनों के साथ गहरे संवाद में है।

निष्कर्ष

भारतीय सिनेमा में रामकथा की यात्रा केवल तकनीकी विकास की कहानी नहीं है, बल्कि यह देश की सांस्कृतिक चेतना, धार्मिक आस्था और सामाजिक मूल्यों के निरंतर पुनर्पाठ का माध्यम रही है। मूक फ़िल्मों के प्रारंभिक प्रयासों से लेकर सवाक् सिनेमा, रंगीन युग, दूरदर्शन और आधुनिक डिजिटल तकनीक तक रामकथा हर दौर में अपने समय की संवेदनशीलता और चुनौतियों के अनुरूप रूपायित होती रही है। जहाँ प्रारंभिक फ़िल्मों में भक्ति और सांस्कृतिक आग्रह प्रमुख रहे, वहीं बाद के दौर में तकनीक, वैश्विक दर्शक और नवीन प्रस्तुति–शैली ने इसे नए आयाम दिए। यह स्पष्ट है कि राम का चरित्र भारतीय जनमानस में केवल एक कथानक नहीं, बल्कि आदर्श, मर्यादा और मानवीय मूल्यों का प्रतीक है।

संदर्भ सूची

1. dhikari] A- & Amity School of Communication, Amity university, Uttar Pradesh- (2021). A Study On The Re-Telecast Of Ramanand Sagar's Ramayana, International Journal of Creative Research Thoughts, 9(2), 4623–4624. https://ijcrt-org/papers/IJCRT2102556-pdf
2. हिंदी सिनेमा और साहित्य का अंतरसंबंध, योगेश कुमार साहू International Journal of Early Childhood Special Education (INT&JECSE) DOI:10-48047/intjecse/v11i2-670544ISSN: 1308-5581 Vol 11, Issue 02 2019
3. साहित्य और सीनेमा में राम: एक अध्ययन, International Journal of Creative Research Thoughts, IJCRT | Volume 12, Issue 8 August 2024 | ISSN: 2320–2882
4. Desk] W- (2024) Bhagwan Sri Ram*s journey in Bollywood*s cinematic, https://organiser-org/2024/01/09/215291/bharat/bhagwan–sri–rams–journey–in–bollywoods–cinematic– landscape
5. Raghunath Singh, et al. Cinematic Depiction of Lord Ram in Bollywood Films- J Mark Soc Res- 2025:2(6):284–289-